Volume 2, No.1(January 2013) P. 1-3

Sangeet Galaxy
ISSN : 2319-9695

अंतर्मन का संगीत

(पुस्तक समीक्षा)

–डॉ0 दीपक कुमार त्रिपाठी

E mail: dktripathi88@gmail.com

"अंतर्मन का संगीत" पुस्तक डॉ0 अमित कुमार वर्मा के द्वारा संकलित संगीत का एक अनुपम विचारकोश है, जिसमें संगीतविदों, साहित्यकारों, व दार्शनिकों के संगीत संबंधी सुविचारों को सूक्ति रूप में संकलित किया गया है। सूक्तियों के संदर्भ में कहा गया है कि ज्ञानियों के ज्ञान और युगों के अनुभव सूक्तियों के माध्यम से सुरक्षित रहते है। सूक्तियों के गागर में ज्ञान, प्रेरणा, और सदुपदेश का सागर समाहित होता है। ज्ञातव्य है कि साहित्य, कला व अन्य विषयों पर परिभाषाओं व सूक्तियों के कोश भरे पड़े है किन्तु संगींत के क्षेत्र में किसी विशेष बिन्दु को केन्द्रित कर तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करना एक शोधपूर्ण तथा श्रमसाध्य कार्य है अतएव इस क्षेत्र में प्रथमतः यह भागीरथ प्रयास डॉ0 अमित कुमार वर्मा द्वारा संकलित पुस्तक "अंतर्मन का संगीत" में मिलता है जो कि सुधी पाठको के समक्ष प्रस्तुत है।

पुस्तक में संगीत की तीनों ही विधाओं (गायन, वादन, व नृत्य) से संबंधित जैसे संगीत, नाद, श्रुति–स्वर, ग्राम, मूर्च्छना, राग, आलाप, तान, रस, लय, ताल, नृत्य तथा सौन्दर्य आदि बिन्दुओं पर शास्त्रोक्त परिभाषाओं का संग्रह मिलता है। संगीत ग्रन्थों जैसे नाट्यशास्त्र, वृहद्देशी, संगीत रत्नाकर, संगीत पारिजात, आदि ग्रन्थ संस्कृत भाषा में ही प्राप्त होते है। इन ग्रंथों में संस्कृत में उल्लिखित संगीत विषयक विचारों व परिभाषाओं को उनके हिन्दी अनुवाद सहित क्रमबद्ध रूप से संकलित किया गया है। इसी क्रम में ध्रुवपद–धमार, ख्याल, ठुमरी–दादरा, लोकसंगीत, गजल आदि विधाओ पर भी संबधित कलाविदों के विचारों को महत्वपूर्ण स्थान मिला है लेकिन लक्षणगीत, सरगम, तराना, टप्पा, भजन आदि सांगीतिक विधाओं पर भी सूक्तियों की आवश्यकता प्रतीत होती है। वाद्य, बंदिश, शैली, तिहाई, मेलोडी–हार्मनी आदि विषयों के साथ वाद्ययन्त्रों में केवल तबला को ही पुस्तक में स्थान प्राप्त हुआ है जो संभवतः लेखक की निज विषय अभिरुचि का परिचायक है।

भारतीय संगीतविदों के साथ ही पाश्चात्य संगीतकारों व दार्शनिकों के संगीत विषयक विचारों को भी पुस्तक मे स्थान दिया गया है, जिस कारण यह पुस्तक वैश्विक स्तर पर संगीत विषय में जो चिंतन मनन हुआ है, उसका भी लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है। पुस्तक में शोधार्थियों की आवश्यकतों को ध्यान में रखते हुए संगीत विषयक सूक्तियों व परिभाषाओं का संग्रह क्रमबद्ध रूप से संदर्भ स्रोत की सूचना के साथ किया गया है, ताकि अधिक से अधिक शोध सामग्री इस पुस्तक मे

उपलब्ध हो सके। इसके साथ–साथ विभिन्न मतों का एक स्थान पर समालोचनात्मक संकलन पाठकों के सम्मुख विचारणा व शोध के मार्ग भी प्रशस्त करता है।

पुस्तक में जहां राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, मुंशी प्रेमचन्द्र आदि भारतीय महाविभूतियों के अन्तर्भावो के पुष्प है वहीं पाश्चात्य विद्वानो जैसे टॉलस्टाय, कीट्स, खलील जिब्रान की संगीत के प्रति विचारो की सुगंधि है। सूक्तियों व विचारो के बहुरंगी पुष्पों से सजा विविध नाम से एक अलग कोना भी है जिसमें साहित्यकारो व संगीत मर्मज्ञो ने अपने अंतर्मन की कथा और व्यथा रोचकता से कही है जैसे डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्ग जी ने संगीत में हो रहे शोधकार्यों की गुणवत्ता पर चिंता निम्नलिखित शब्दों मे व्यक्त की है– *"प्राचीनकाल में शोध का लक्ष्य मोक्ष होता था, मध्यकाल में शोध का लक्ष्य रंजन हो गया और वर्तमान में शोध का लक्ष्य नौकरी है। संक्षेप में यही भारतीय संगीत का इतिहास है।"*

कविता छन्दोबद्य होने के कारण उसके माध्यम से कही गई बात स्थायी, हृद्यग्राही, और जनसाधारण को प्रभावित करने वाली होती है। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में काव्यगत क्षणिकाओं का अपना अनुपम स्थान है उदाहरण स्वरूप सुमित्रानन्दन पन्त जी द्वारा रचित *"नाद ही सृष्टि का उन्मेश नाद ही सृष्टि नाद ही वेद"* काव्य पक्तियाँ नाद की महिमा का बखान रोचकता के साथ कर रही है साथ ही साथ उर्दू की सबसे लोकप्रिय विधा गजल का उल्लेख शायरी के माध्यम से हुआ है, जैसे लोकप्रिय शायर बशीर बद्र के शब्दों में–

"नजर से गुफ्तगू खामोश लब तुम्हारी तरह

गजल ने सीखे है अंदाज सब तुम्हारी तरह"

अरविन्द असर जी की इन पंक्तियों से घुंघरूओं की झंकार कुछ इस तरह आती है–

"लब खुले जब–जब तुम्हारे कुछ भी कहने के लिए

यूं लगा जैसे हवा ने घुंघरूओं को छू लिया"

अतएव भाषा का अनूठा संगम हिन्दी की काव्यधारा तथा उर्दू की शायरी के रूप में हुआ है जो कि संकलनकर्ता के काव्यप्रेम को दर्शन कराता है। स्वयं लेखक के अनुसार "बहुमूल्य ज्ञान से परिपूर्ण संगीत मनीषियों के अनुभवजन्य ज्ञान के मोती हमें इन प्राचीन व नवीन ग्रंथो में सूक्ति के रूप में प्राप्त होतें है। मैनें इन्हीं मोतियों को पिरोकर एक माला बनाकर आपके सम्मुख प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।" अन्ततः इस पुस्तक के लेखक के लिए मै यही कहना चाहुँगा कि–

"कोई चलता पदचिह्नो पर कोई पदचिह्न बनाता है

है वही सूरमा इस जग का दुनियाँ में पूजा जाता है।

अतः ऐसे प्रयास अति आवश्यक है जिनके द्वारा संगीत और संस्कृति की प्रतिष्ठा बढ़ती रहे। आशा है कि संगीत का यह अनुपम विचारकोश संगीत शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संकलन होगा जो कि पठनीय भी है और संग्रहणीय भी।

पुस्तक – अंर्तमन का संगीत
लेखक – डॉ0 अमित कुमार वर्मा
प्रकाशक – कनिष्क प्रकाशन
4697/5–21 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110002
फोन– 011–23270497, 23288285
मूल्य – रू0 395/–